INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

MPPSC-PCS

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 8

सामान्य हिंदी एवं व्याकरण

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"MPPSC -PCS (Madhya Pradesh Public Service Commission) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1	व्याकरण • संज्ञा • सर्वनाम • विशेषण • क्रिया • लिंग • वचन • काल	1-16
2.	रस • अंग एवं प्रकार	16-19
3	छंद • प्रकार, दोहा, सोरठा, चौपाई	20-24
4.	वाक्यों का अनुवाद • हिंदी से अंग्रेजी • अंग्रेजी से हिंदी	24-31
5.	संधि एवं संधि विच्छेद • प्रकार एवं उनका वर्णन	32-45
6.	समास एवं समास – विग्रह • प्रकार एवं उनकी व्याख्या	46-61
7.	प्रशासनिक एवं मानक शब्दावली • हिंदी से अंग्रेजी शब्द • अंग्रेजी से हिंदी शब्द	61-75
8.	विराम-चिह्न	76-78
9.	मुहावरे	78-83

10.	लोकोक्तियाँ एवं कहावतें	84-89
11.	विलोम शब्द	89-103
12.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	103-117
13.	तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज	118-125
14.	पर्यायवाची शब्द	126-135
15.	शब्द युग्म	135-144
16.	वर्तनी शोधन	144-149
17.	वाक्य संरचना एवं प्रकार	149-153
18.	शब्दार्थ	154-155
19.	पल्लवन	155-158
20.	मध्य प्रदेश की प्रमुख बोलियाँ • मालवी, निमाड़ी, बघेली, और बुन्देली	159-160
21.	अपठित गद्यांश	161-172

अध्याय – I

व्याकरण

- **संज्ञा**

संज्ञा (Noun) की परिभाषाः-

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं

दूसरे शब्दों में- किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं ।

जैसे – प्राणियों के नाम- मोर, घोड़ा, अनिल, किरण जवाहरलाल नेहरू आदि ।

वस्तुओं के नाम- अनार ,रेडियों , किताब, संदूक, आदि ।

स्थानों के नाम- कुतुबमीनार , नगर, भारत, मेरठ आदि

भावों के नाम- वीरता , बुढ़ापा, मिठास आदि

यहाँ 'वस्तु ' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल वाणी और प्रदार्थ का वाचक नहीं ,वरन उनके धर्मों का भी सूचक है।

साधारण अर्थ में 'वस्तु ' का प्रयोग इस अर्थ में नही होता। अतः वस्तु के अंतर्गत प्राणी, प्रदार्थ और धर्म आते हैं। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किये गये हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के तीन भेद होते हैं-

(1) व्यक्तिवाचक (Proper noun)

(2) जातिवाचक (Common noun)

(3) भाववाचक (Abstract noun)

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा :-जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। **जैसे-**

व्यक्ति का नाम-रवीना , सोनियां गाँधी , श्याम, हरि, सुरेश, सचिन आदि ।

वस्तु का नाम- कर , टाटा चाय, कुरान , गीता ,रामायण आदि ।

स्थान का नाम-ताजमहल, कुतुबमीनार , जयपुर आदि ।

दिशाओं के नाम- उत्तर , पश्चिम , दक्षिण , पूर्व ।

देशों के नाम- भारत , जापान , अमेरिका, पाकिस्तान , बर्मा।

राष्ट्रीय जातियों के नाम- भारतीय , रूसी, अमेरिकी।

समुन्द्रों के नाम- काला सागर , भूमध्य सागर , हिन्द महासागर , प्रशान्त महासागर।

नदियों के नाम- गंगा, ब्रह्मपुत्र, बोल्गा, कृष्णा कावेरी , सिन्धु।

पर्वतों के नाम- हिमालय, विन्ध्याचल, अलकनंदा, कराकोरम।

नगरों चोको और सड़कों के नाम वाराणसी , गया,चाँदनी चौक, हरिसन रोड़, अशोक मार्ग ।

पुस्तकों तथा समाचारों के नाम- रामचरित मानस, ऋग्वेद , धर्मयुग, इण्डियन नेशन, आर्यावर्त ।

ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही -विद्रोह, अक्तूबर –क्रांति ।

दिनों महीनों के नाम- मई, अक्टूबर ,जुलाई, सोमवार , मंगलवार ।

त्योहारों उत्सवों के नाम- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी ।

(2) जातिवाचक संज्ञा :-

जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बच्चा, जानवर, नदी, अध्यापक, बाजार, गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा' हैं।

जैसे – लड़का, पशु-पक्षियों वस्तु , नदी , मनुष्य, पहाड़ आदि।

'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों का बोध होता है।

'पशु-पक्षियों से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता है।

'वस्तु' से मकान, कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता है।

'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता है।

'मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता है।

'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता है।

(3) भाववाचक संज्ञाः-

थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी , आजादी , हँसी , चढ़ाई, साहस, वीरता आदि शब्द-भाव, गुण, अवस्था तथा क्रिया के व्यापार का बोध करा रहें हैं।

इसलिए ये 'भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

इस प्रकार-जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि । इन उदाहरणों में 'उत्साह' से मन का भाव है। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता है। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता है। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाए हैं। हर प्रदार्थ का धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म प्रदार्थ से अलग नही रह सकता। घोड़ा है, तो उसमें बल है, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। 'धर्म, गुण, अर्थ और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

भाववाचक संज्ञाएँ बनानाः-

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय शब्दों से बनती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्रायः पन, त्व, ता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(1) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनानाः-

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
स्त्री-	स्त्रीत्व	भाई-	भाईचारा
मनुष्य-	मनुष्यता	पुरुष-	पुरुषत्व, पौरुष
शास्त्र-	शास्त्रीयता	जाति-	जातीयता
पशु-	पशुता	बच्चा-	बचपन
दनुज-	दनुजता	नारी-	नारीत्व
पात्र-	पात्रता-	बूढा-	बुढ़ापा
लड़का-	लड़कपन	मित्र-	मित्रता
दास-	दासत्व	पण्डित-	पण्डिताई
अध्यापक-	अध्यापन	सेवक-	सेवा

(2) विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनानाः-

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
लघु-	लघुता,लघुत्व, लाघव	वीर-	वीरता, वीरत्व
एक-	एकता, एकत्व	चालाक-	चालाकी
ख़ट्टा-	खटाई	गरीब	गरीबी
गंवार	गंवारपन	पागल	पागलपन
बूढा	बुढ़ापा	मोटा	मोटापा
नबाव	नबाबी	दीन	दीनता,दैन्य
बड़ा	बड़ाई	सुंदर	सौंदर्य, सुंदरता
भला	भलाई	बुरा	बुराई
ढीठ	ढिठाई	चौड़ा	चौड़ाई
लाल	सरलता सारल्य	आवश्यकता	आवश्यकता
परिश्रमी	परिश्रम	अच्छा	अच्छाई
गंभीर	गंभीरता, गांभीर्य	सभ्य	सभ्यता
स्पष्ट	स्पष्टता	भावुक	भावुक
अधिक	अधिकता, आधिक्य	अधिक	अधिकता
सर्द	सर्दी	कठोर	कठोरता
मीठा	मिठास	चतुर	चतुराई
सफेद	सफेदी	श्रेष्ठ	श्रेष्ठता
मूर्ख	मूर्खता	राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता
खोजना	खोज	सीना	सिलाई
जीतना	जीत	रोना	रुलाई
लड़ना	लड़ाई	पढ़ना	पढ़ाई
चलना	चाल, चलन	पीटना	पिटाई
देखना	दिखावा, दिखावट	समझना	समझ
सींचना	सिंचाई	पड़ना	पड़ाव
पहनना	पहनावा	चमकना	चमक
लूटना	लूट	जोड़ना	जोड़
घटना	घटाव	नाचना	नाच
बोलना	बोल	पूजना	पूजन
झूलना	झूला	जोतना	जुताई
कमाना	कमाई	बचना	बचाव
रुकना	रुकावट	बनना	बनावट
मिलना	मिलावट	बुलाना	बुलावा
भूलना	भूल	छापना	छापा, छपाई
बैठना	बैठक, बैठकी	बढ़ना	बाढ़
घेरना	घेरा	छींकना	छींक
फिसलना	फिसलन	खपना	खपत
रँगना	रंगाई, रंगत	मुसकारना	मुसकान
उड़ना	उड़ान	घबराना	घबराहट
मुड़ना	मोड़	सजाना	सजावट
चढ़ना	चढाई	बहना	बहाव
मारना	मार	दौड़ना	दौड़
गिरना	गिरावट	कूदना	कूद

- **विशेषण**

परिभाषा :-किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं, अर्थात् जो विशेषता बताने वाले शब्द होते हैं, विशेषण कहलाते हैं ।

जैसे - नील गगन, काली गाय, सुन्दर बच्चा, अमीर आदमी, दयालु औरत, कश्मीरी सेब, होशियार लड़का इत्यादि ।

विशेष्य -

विशेषण के द्वारा जिसकी विशेषता बतलाई जाती हैं, उसे विशेष्य कहलाते हैं ।

जैसे - गगन, गाय, बच्चा, आदमी, औरत, सेब, लड़का इत्यादि।

प्रविशेषण - विशेषण की भी विशेषता बताने वाले शब्द, प्रविशेषण कहलाते हैं ।

वाक्य	प्रविशेषण	विशेषण	विशेष्य
अत्यन्त नीला गगन	अत्यन्त	नीला	गगन
बहुत मोटा आदमी	बहुत	मोटा	आदमी

विशेषण के दो भेद:-

1. उद्देश्य विशेषण
2. विधेय विशेषण

1. **उद्देश्य विशेषण** :- विशेष्य से पहले प्रयुक्त होने वाले विशेषणों को उद्देश्य / विशेषण कहते हैं ।

   जैसे लाल टमाटर, हरा धनिया, नीहारिका सुंदर लड़की हैं ।

2. **विधेय विशेषण:- विशेष्य** - संज्ञा शब्दों के बाद प्रयुक्त होने वाला विशेषण विधेय/विशेषण कहलाता हैं । **जैसे** -

- वह लड़की सुंदर हैं । लड़की – संज्ञा
- यह गाय काली हैं । सुन्दर – विशेषण
- वे फल मीठे हैं ।
- यह पानी शीतल हैं ।

विशेषण के भेद:- पाँच भेद

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक/संकेतवाचक/निर्देशवाचक विशेषण
5. व्यक्तिवाचक विशेषण

1. **गुणवाचक विशेषण -** वे विशेषण शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के रूप, रंग, आकार, स्वभाव, गुण, दोष, अवस्था, दशा, दिशा इत्यादि का बोध कराते हैं । गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं ।

   जैसे - सुन्दर लड़का, काला कोट, कमजोर बच्चा, झगडालु औरत, ईमानदार आदमी, मोटा लड़का, गरीब आदमी, पूर्वी मकान इत्यादि ।

2. **संख्यावाचक विशेषण -**

वे विशेषण शब्द जो किसी संज्ञा/सर्वनाम की निश्चित या अनिश्चित संख्या का बोध कराते हैं, संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं ।

जैसे - एक लड़का, दो कबूतर, तीन गायें, कुछ लड़कियाँ, बहुत बकरियाँ कुछ पुस्तकें, ज्यादा पंखे इत्यादि ।

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं -

1. **निश्चित संख्यावावक विशेषण**
2. **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण**

1. **निश्चित संख्यावाचक विशेषण** - वे विशेषण शब्द जो किसी गणनीय संज्ञा की निश्चितता का बोध कराते हैं, निश्चित संख्यावाचक विशेषण शब्द कहलाते हैं ।

जैसे - एक आम, दो केले, तीन घड़ियाँ , चार कुर्सियाँ, पाँच कुत्ते इत्यादि

निश्चित संख्यावाचक विशेषण के उपभेद -

1. गणनावाचक - एक, दो, तीन, चार .....
2. क्रमवाचक - पहला, दूसरा, तीसरा .....
3. आवृत्ति वाचक - दुगुना, तिगुना, चौगुना .....
4. समुदाय/समूहवाचक - दोनों, तीनों, चारों.....
5. प्रत्येक सूचक - प्रत्येक लड़का, प्रत्येक लड़की, हर घड़ी, हर माह, हर दिन इत्यादि ।

1. **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण** - वे विशेषण शब्द जो किसी अनिश्चित संख्या का बोध कराते हैं, अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं - जैसे - थोड़े, बहुत, कम, ज्यादा, थोड़े लड़के, ज्यादा लड़कियाँ, बहुत गायें, कम बकरियाँ, कुछ कुर्सियाँ इत्यादि ।

3. **परिमाण वाचक विशेषण** - वे विशेषण शब्द जो किसी निश्चित या अनिश्चित नाप,माप,तौल इत्यादि का बोध कराते हैं, परिणाम-वाचक विशेषण कहलाते हैं, जैसे - दो मीटर कपड़ा, तीन लीटर दूध, पाँच किलो आटा, थोड़ा घी, ज्यादा पानी इत्यादि।

परिमाण वाचक विशेषण के दो उपभेद होते हैं -

1. निश्चित परिमाणवाचक
2. अनिश्चित परिमाणवाचक

1. **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण** - वे विशेषण शब्द जो किसी नाप, माप, तौल इत्यादि की निश्चितता का बोध कराते हैं, निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं । जैसे - एक मीटर रस्सी, दो लीटर पानी, तीन किलो सेब, पाँच किलो चावल ।
2. **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण** - वे विशेषण शब्द जो किसी नाप, माप, तौल इत्यादि की अनिश्चितता का बोध कराते हैं, अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं -

- **क्रिया**

परिभाषाः- जिस शब्द से किसी काम का होना, करना, पाया जाये वह क्रिया कहलाती हैं ।

नोटः- धातु को मूलतः क्रिया के मूल रूप को कहा जाता है अर्थात् क्रिया के मूलरूप को धातु कहते हैं ।

क्रिया के भेद या प्रकार - (02)

क्रिया दो प्रकार की होती है या रचना या बनावट के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती हैं ।

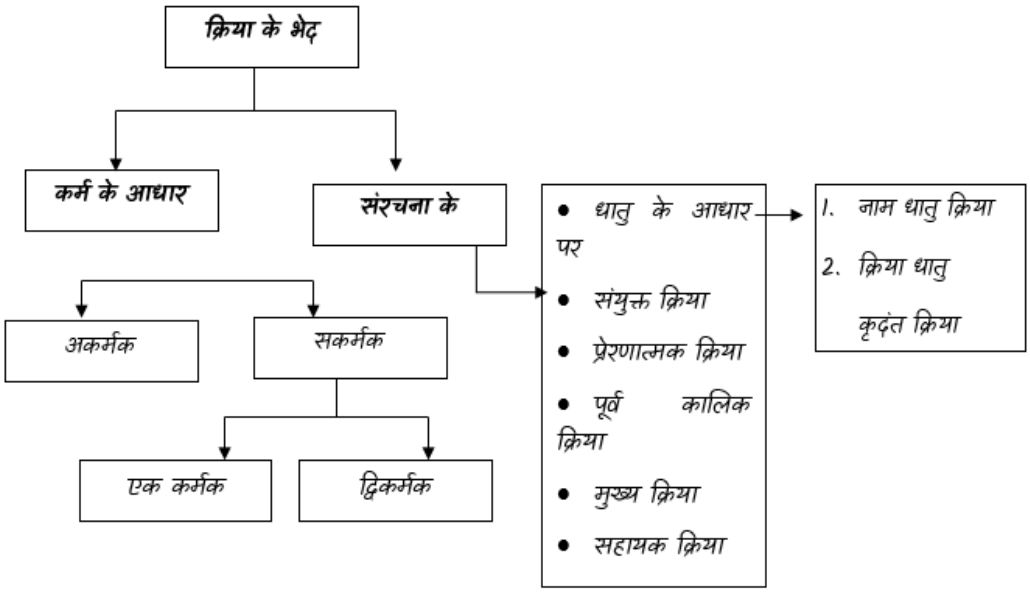

- **सकर्मक क्रियाः-** जिस क्रिया में कर्म हो या कर्म के होने की संभावना हो और क्रिया का प्रभाव या पाल सीधे कर्म पर पड़े तो या कर्म की संभावना पर पड़े तो वह सकर्मक क्रिया कहलाती हैं । **उदाहरणः-** राम फल खाता है ।
  राम गाना गाता है ।
  राम पत्र लिखता है ।

  नोट :- उपर्युक्त वाक्यों में खाना, गाना, लिखना क्रियाओं का प्रभाव फल, गाना, पत्र कर्म पदों पर पड़ रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ हैं ।
  सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले "क्या" "किसको" लगाकर प्रश्न पूछा जाता है । और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है । और वह उत्तर ही कर्म होता है । और वह क्रिया सकर्मक होता है ।

  सकर्मक क्रिया के भेद :-

1. **एक कर्मक क्रिया :-** जहाँ क्रिया एक क्रम के साथ होती है, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं ।
   जैसे - मोहन खाना खाता है ।
   नीलम पुस्तक पढ़ती है ।
2. **द्विकर्मक क्रिया :-** जहाँ क्रिया दो कर्म के बिना संभव नहीं हो सकती उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं ।
   जैसे :- राम ने श्याम को पुस्तक दी ।
   मैंने पुलिस को चोर पकड़वा दिया।

द्विकर्मक क्रिया वाले वाक्य में एक कर्म के आगे कर्म कारक का चिह्न "को" लगा रहता है । तथा दूसरे कर्म हम क्रिया के पहले "क्या" प्रश्न पूछकर जान सकते हैं ।

जैसे - मैंने पुलिस को चोर पकड़वा दिया - पुलिस के आगे "को" कारक चिह्न लगा हुआ है । तथा "क्या" पकड़वा दिया? प्रश्न का उत्तर होगा - चोर । अतः दूसरा कर्म - चोर है ।

- **अकर्मक क्रियाः-** जिस क्रिया में कर्म न हो या क्रिया का फल या प्रभाव सीधे कर्ता पर पड़े तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
  उदाहरण - नरेश दौड़ रहा है ।
  बच्चा रोता है ।
  चिड़िया उड़ रही है ।
  दौड़ रहा है , उड़ रही है , रोता है - क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः नरेश, चिड़िया, और बच्चा कर्ता - पदों पर ही पड़ता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है।
  Trick:- अगर काम खुद पर हो तो अकर्मक होगी
  उदाहरणः- हंसना, जागना, रोना, सोना, नाचना, ओढ़ना, पिसना आदि ।

  क्रिया के अन्य भेद या प्रकार

- **पूर्वकालिक क्रिया**
- **द्विकर्मक क्रिया**
- **संयुक्त क्रिया**
- **प्रेरणार्थक क्रिया**
- **सहायक क्रिया**

- **पूर्वकालिक क्रियाः-** जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त करके दूसरी क्रिया प्रारम्भ करता हैं तो पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं ।
  पहचान - कर, करके
  उदाहरण - रीना खाना खाकर सो गयी ।
  दुष्यन्त पानी पीके सो गया ।
  राम पत्र लिखकर चला गया ।

अध्याय – 6

समास एवं समास – विग्रह

▶ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है! ⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

जैसे:-

गंगाजल	गंगाजल	- गंगा का जल
गंगा	जल	गंगा जल
(पूर्वपद)	(उत्तरपद)	(समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही

समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

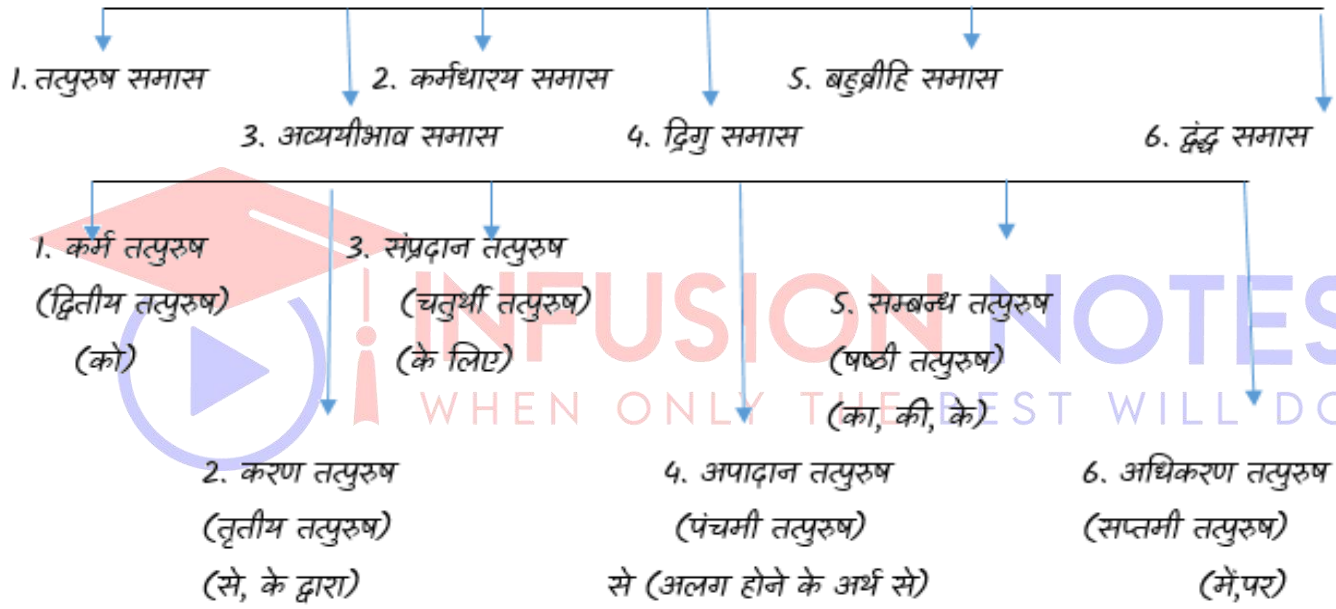

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और दिगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत , हर आदि।

(I) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत,

समस्त पद		विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा

आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो / जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप में / जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में / (एक हाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ –नभ	-	पूरे नभ में
रंग - रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा – मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प –चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली – गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो – दो	-	दोनों दो। प्रत्येक दोनों
रोम- रोम	-	पूरे रोम मे
नए – नए	-	बिल्कुल नए
हरे - हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी – बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे – मारे	-	बिना मारे

जगह – जगह	-	प्रत्येक जगह
मील – भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक - एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे – धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे – छोटे	-	बहुत छोटे
भरे - पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला / वाली
खुला – खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरू – शुरू	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग- अंग	-	प्रत्येक अंग
अहैतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष – वर्ष /हर वर्ष
छातीभर	-	छाती तक
बार-बार	-	बहुत बार
देखते - देखते	-	देखते ही देखते
एकदम	-	अचानक से
रात-रात	-	पूरी रात भर
सालों-साल	-	बहुत साल
रातों-रात	-	बहुत रात
इरा – इरा	-	बहुत इरा
तरह- तरह	-	बहुत तरह के
भरपूर	-	पूरा भर के
सालभर	-	पूरे साल
घर-घर	-	प्रत्येक घर
नए-नए	-	बिल्कुल नए
घूमता- घूमता	-	बहुत घूमता
बेशक	-	बिना शक के
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग

आरामकुर्सी	-	आराम के लिए कुर्सी
देवबलि	-	देव के लिए बलि
राज्यलिप्सा	-	राज्य के लिए लिप्सा
पाठशाला	-	पाठ के लिए शाला
वासस्थान	-	वास के लिए स्थान
मवेशीखाना	-	मवेशियों के लिए जगह
टूथपेस्ट	-	टूथ (दाँत) के लिए पेस्ट
रासलीला	-	रास के लिए लीला
छात्रावास	-	छात्रों के लिए आवास
आनन्दभवन	-	आनन्द के लिए भवन
जेबखर्च	-	जेब के लिए खर्च
विद्यापीठ	-	विद्या के लिए पीठ
शान्तिनिकेतन	-	शान्ति के लिए निकेतन
प्रचारगाड़ी	-	प्रचार के लिए गाड़ी
अतिथिशाला	-	अतिथि के लिए शाला
मृत्युदंड़	-	मृत्यु के लिए दिया जाने वाला दंड़
विश्रामस्थल	-	विश्राम के लिए स्थल
बलि पशु	-	बलि के लिए पशु

[IV] <u>अपादान तत्पुरुष समास (पंचमी तत्पुरुष)</u>:- जिस तत्पुरुष समास में अपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने के भाव में) लुप्त हो जाती है, वहाँ अपादान तत्पुरुष समास होता है जैसे –

<u>नोटः-</u>

हीन, मुक्त शब्द अलग होने के अर्थ में प्रयोग होते हैं।

समस्त पद		**विग्रह**
धनहीन	-	धन से हीन
गुणहीन	-	गुण से हीन
जलहीन	-	जल से हीन
आवरणहीन	-	आवरण से हीन
कर्महीन	-	कर्म से हीन
नेत्रहीन	-	नेत्र से हीन
वाक्यहीन	-	वाक्य से हीन
भाषाहीन	-	भाषा से हीन
संगीहीन	-	संगी से हीन
पथभ्रष्ट	-	पथ से भ्रष्ट (भ्रष्ट-बिगड़ा हुआ, नीचे गिरा हुआ)
पदच्युत	-	पद से च्युत
देशनिकाला	-	देश से निकाला
ऋणमुक्त	-	ऋण से मुक्त
पापमुक्त	-	पाप से मुक्त का
जीवनमुक्त	-	जीवन से मुक्त
पदमुक्त	-	पद से मुक्त
अभियोगमुक्त	-	अभियोग से मुक्त
कर्तव्य विमुख	-	कर्तव्य से विमुख (विमुख-वंचित)
आशातीत	-	आशा से अतीत
धर्मभ्रष्ट	-	धर्म से भ्रष्ट (भ्रष्ट-बिगड़ा हुआ, आचरणहीन, नीचे गिरा हुआ)
धर्म विमुख	-	धर्म से विमुख
बन्धन मुक्त	-	बन्धन से मुक्त
पापोद्धार	-	पाप से उद्धार
अपराधमुक्त	-	अपराध से मुक्त
रोगमुक्त	-	रोग से मुक्त
जातिभ्रष्ट	-	जाति से भ्रष्ट (भ्रष्ट- बिगड़ा, आचरणहीन)
आकाशवाणी	-	आकाश से वाणी
जलरिक्त	-	जल से रिक्त
गर्वशून्य	-	गर्व से शून्य
धर्मविरत	-	धर्म से विरत
त्रुटिहीन	-	त्रुटि से हीन
वीरविहीन	-	वीर से हीन

[v] संबंध तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष) :- जिस तत्पुरुष समास मे संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'की', 'के' लुप्त हो जाती है, वहाँ संबंध तत्पुरुष समास होता है।

जैसे :-

समस्त पद	-	**विग्रह**
राजपुत्र	-	राजा का पुत्र
राजाज्ञ	-	राजा की आज्ञा
पराधीन	-	पर के अधीन
राजकुमार	-	राजा का कुमार
देवरक्षा	-	देव की रक्षा
शिवालय	-	शिव का आलय (आलय = घर)
गृहस्वामी	-	गृह का स्वामी
विद्यासागर	-	विद्या का सागर
लोकतंत्र	-	लोगों का तंत्र

ईश्वरभक्त	-	ईश्वर का भक्त
राजदूत	-	राजा का दूत
राजसभा	-	राजा की सभा
लखपति	-	लाखों (रुपयों) का पति
जलधारा	-	जल की धारा
क्षमादान	-	क्षमा का दान
मताधिकार	-	मत का अधिकार
भारत रत्न	-	भारत का रत्न
मृत्युदंड़	-	मृत्यु का दंड़
स्वतन्त्र	-	स्व का तन्त्र
देव मूर्ति	-	देव की मूर्ति
गंगा – तट	-	गंगा का तट
अमृतधारा	-	अमृत की धारा
गणपति	-	गण का पति (गणेश)
राजकन्या	-	राजा की कन्या
गंगाजल	-	गंगा का जल
राजपुरुष	-	राजा का पुरुष
घुड़दौड़	-	घोड़ों की दौड़
राजरानी	-	राजा की रानी
पर्णशाला	-	पर्ण की शाला
राष्ट्रपति	-	राष्ट्र का पति
लोकसभा	-	लोगों की सभा
सेनाध्यक्ष	-	सेना का अध्यक्ष
देशप्रेम	-	देश का प्रेम
मातृशक्ति	-	माता की शक्ति
आत्मसम्मान	-	आत्मा का सम्मान
जलापूर्ति	-	जल की आपूर्ति
स्वलेख	-	स्व का लेख
आत्मरक्षा	-	आत्मा की रक्षा
प्रजापति	-	प्रजा का पति
सेनापति	-	सेना का पति
श्रमदान	-	श्रम का दान
देशसेवक	-	देश का सेवक
उद्योगपति	-	उद्योग का पति
पशुपति	-	पशुओं का पति
राजनीति	-	राजा की नीति
देशोद्धार	-	देश का उद्धार
आनंद श्रम	-	आनन्द काआश्रम

गुरुसेवा	-	गुरु की सेवा
ग्रामोद्धार	-	ग्राम का उद्धार
चंद्रोदय	-	चंद्र का उदय
दया सागर	-	दया का सागर
पुस्तकालय	-	पुस्तक का आलय (आलय = घर)
विद्यालय	-	विद्या का आलय (आलय = घर)
रामायण	-	राम का अयन
मोरपंख	-	मोर का पंख
दावानल	-	जंगल की आग
ब्रिटिशराज	-	ब्रिटिश का राज
लौह श्रंखला	-	लोहे की श्रंखला
रणभेरी	-	रण की भेरी
हिमपात	-	हिम का पात अर्थात् (बर्फ) का गिरना
ब्याहमंड़प	-	ब्याह के मंड़प
वनस्थली	-	वन का स्थल
प्रेम कहानी	-	प्रेम की कहानी
भारतवासियों	-	भारत के वासियों
संध्या समय	-	संध्या के समय
विचार विनिमय	-	विचारों का विनिमय
प्रेमलिंगन	-	प्रेम का आलिंगन
अभिनंदनपत्र	-	अभिनंदन का पत्र
जोर अजमाई	-	जोर (ताकत) की अजमाई
दोपहर	-	दो पहरों का समाहर
समुद्रतल	-	समुद्र का तल
हिमालय	-	हिम (बर्फ) का आलय (आलय = घर)
जीवनशैली	-	जीवन की शैली
जीवनदर्शन	-	जीवन का दर्शन
सौंदर्यप्रसाधनों	-	सौंदर्य के प्रसाधनों
प्रतिष्ठा चिन्ह	-	प्रतिष्ठा के चिन्ह
मनचाहा	-	मन के अनुसार
लक्ष्य भ्रम	-	लक्ष्य का भ्रम
उपभोक्तावाद दर्शन	-	उपभोक्तावाद का दर्शन
व्यक्तिकेंद्रता	-	व्यक्ति की केंद्रता
वनपक्षी	-	वन का पक्षी
घटनाक्रम	-	घटनाओं का क्रम

अध्याय – 13

तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज

तत्सम एवं तद्भव

शब्द – भेद

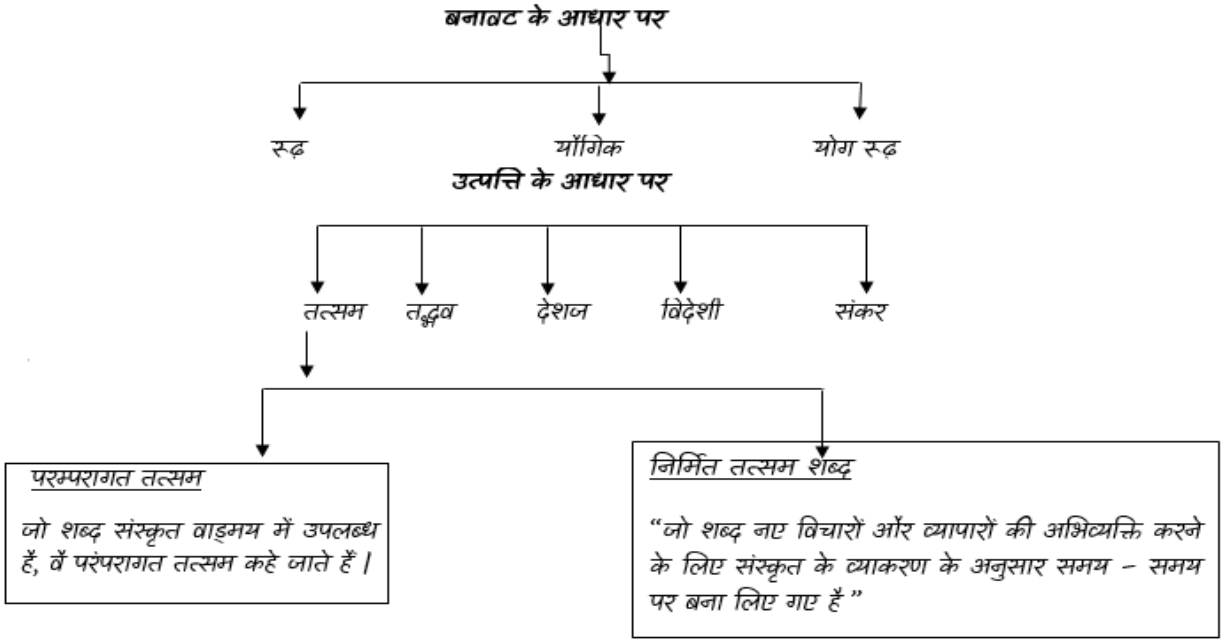

1. **तत्सम :** ' तत्सम ' (तत् + सम) शब्द का अर्थ है – 'उसके समान' अर्थात् संस्कृत के समान। हिन्दी में अनेक शब्द संस्कृत से आए हैं और आज भी उसी रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं। अतः संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे हम ज्यों-का –त्यों प्रयोग में लाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं ; जैसे – अग्नि,वायु, माता, पिता, प्रकाश , पत्र सूर्य आदि।
2. **तद्भव शब्द** – ' तद्भव ' शब्द का अर्थ है- ' उससे होना ' ; अर्थात् वें शब्द जो ' स्त्रोत भाषा ' के शब्दों से विकसित हुए हैं। चूँकि ये शब्द संस्कृत से चलकर पालि – प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी तक पहुंचे हैं , अत : इनके स्वरूप में परिवर्तन आ गया है , जैसे – 'दही' शब्द 'कान्ह' शब्द (कृष्ण) से विकसित होकर हिन्दी में आए हैं ऐसे शब्दों को **'तद्भव शब्द'** कहा जाता है।

तत्सम	–	**तद्भव**
यकृत	–	जिगर
यशोदा	–	जसोदा
रज्जु	–	रस्सी
रुक्ष	–	रुखा
रुद्ध	–	रुँधा
शेष	–	रिस
रुष्ट	–	रुठा
रुदन	–	रोना
लंग	–	लंगड़ा
लक्ष	–	लाख
लवंग	–	लौंग
लोमशा	–	लोमड़ी
लवणता	–	लुनाई
वंश	–	बाँस
वर्षण	–	बरसना
व्याघ्र	–	बाघ
वीरवर्णिनी	–	बैंरबानी
वाष्प	–	भाप
वल्गांग	–	बजरंग
वत्स	–	बच्चा / बछड़ा
वट	–	बड़
वरयात्रा	–	बरात
वातकि	–	बैंगन
वृश्चिक	–	बिच्छु
वक	–	बगुला
शर्करा	–	शक्कर
श्मसान	–	मसान
श्वश्रु	–	सास
शूकर	–	सूअर
श्वसुर	–	ससुर
शैया	–	सेज
शुष्ठि	–	सोठ
शुष्क	–	सुखा
शुण्ड	–	सूँड
शुक	–	सुआ
शिक्षा	–	सीख
श्रृंग	–	सींग
श्रृंखला	–	सांकल
श्रृगाल	–	सियार
श्रेष्ठी	–	सेठ
सप्तशती	–	सतसई
सर्पप	–	सरसों

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

स्वप्न	–	सपना
साक्षी	–	साखी
सपत्नी	–	सौत
संधि	–	सेंध
सूचिका	–	साई
स्वर्णकार	–	सुनार
सौभाग्य	–	सुहाग
स्वजन	–	सजन
षोडश	–	सोलह
हिंगु	–	हींग
हीरक	–	हीरा
हरित	–	हरा
हर्ष	–	हरख
हिंदोल	–	हिंडोरा
हृदय	–	हिय
हास्य	–	हँसी
क्षीर	–	खार
शाटी	–	साड़ी
श्याली	–	साली
शून्य	–	सूना
श्रावण	–	सावण
श्रृंगार	–	सिंगार
श्रोढी	–	सीढ़ी
श्रृंगाटक	–	सिंघाडा
सरोवर	–	सरवर
स्तम्भ	–	खंभा
स्नेह	–	नेह
स्पर्श	–	परस
स्वर्ण	–	सोना
समर्पय	–	सौंप
स्त्रोत	–	सोता
सूत्र	–	सूत
सघट्ट	–	सुघड़
स्वामी	–	साई
सत्य	–	सच
सूर्य	–	सूरज
हस्तिनी	–	हथनी
हस्ति	–	हाथी
अस्थि	–	हड्डी
हरिद्रा	–	हल्दी
हट्ट	–	हाट
होलिका	–	होली
हंडी	–	हाँडी
क्षत्रिय	–	खत्री
क्षति	–	छति
क्षीण	–	छीन
क्षेत्र	–	खेत
त्रिणि	–	तीन

प्रस्वेन	–	पसीना
नक्र	–	नाक
पाद	–	पैर
पुष्प	–	पुहुप
प्राण	–	प्रान
पक्व	–	पका
प्रतिच्छाया	–	परछाई
पुच्छ	–	पूँछ
पवन	–	पौन
पट्टिका	–	पाटी
प्रकट	–	प्रगट
फुल्ल	–	फुल्का
फाल्गुन	–	फागुन
बधिर	–	बहरा
बलीवर्द	–	बैल
बिंदु	–	बूँद
नवनीत	–	लोनी
नप्तृ	–	नाती
नारिकेल	–	नारियल
निर्वाह	–	निबाह
निंद्रा	–	नींद
नकुल	–	नेवला
नौ	–	नव
पक्ष	–	पंख
पंक्ति	–	पंगत
प्रहर	–	पहर
पश्चाताप	–	पछतावा
पारद	–	पारा
प्रहरी	–	पहरुआ
पार्श्व	–	पास
पृष्ठ	–	पीठ
पुत्र	–	पूत
प्रणाल	–	परनाला
पंचम	–	पाँचवाँ
पौष	–	पूस
पुत्रवधू	–	पतोहू
पंचदश	–	पंद्रह
पक्षी	–	पंछी
पाषाण	–	पाहन
पण	–	पन
पर्पट	–	पापड़
प्रिय	–	पिय
प्रस्तर	–	पत्थर
पितृ	–	पितर
पत्र	–	पत्ता
फुल्लन	–	फूलना
बर्कर	–	बकरा
बुभुक्षित	–	भूखा

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

जाउँगा	=	जाऊँगा
मुहुर्त	=	मुहूर्त्त
कुतुहल	=	कुतूहल
एरावत	=	ऐरावत
एच्छिक	=	ऐच्छिक
वित्तेषणा	=	वित्तैषणा
त्यौहार	=	त्योहार
न्यौछावर	=	न्योछावर
भोतिक	=	भौतिक
ओजार	=	औजार
दधीची	=	दधीचि
कालीदास	=	कालिदास
रूपया	=	रुपया
अमुल्य	=	अमूल्य
नूपुर	=	नुपुर
प्रतिनिधी	=	प्रतिनिधि
वधु	=	वधू

अन्य कारण-उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त वर्तनी अशुद्धि के और भी कई कारण हो सकते हैं।

इस्कूल	=	स्कूल
इस्नान	=	स्नान
कृष्णा	=	कृष्ण
गुप्ता	=	गुप्त
कालेज	=	कॉलेज
वालीबाल	=	वॉली बॉल
बारहवी	=	बारहवीं
तियालीस	=	तैंतालीस
सहाब	=	साहब

अध्याय – 17

वाक्य संरचना एवं प्रकार

परिभाषा:

- आचार्य विश्वनाथ के अनुसार

विश्वनाथ के अनुसार "वाक्य स्यात योग्यताकांक्षासन्निधिः युक्तः पदोच्चयः।"

अर्थात् - जिस वाक्य में योग्यता और आकांक्षा के तत्व विद्यमान हो वह पदसमुच्चय वाक्य कहलाता है।

- पतंजलि के अनुसार "पूर्ण अर्थ की प्राप्ति कराने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं"

वाक्य की कसौटियाँ:

1. सार्थकता 2. योग्यता 3. आकांक्षा 4. आसक्ति या निकटता 5. पदक्रम 6. अन्वय

सार्थकता - वाक्य में सदैव सार्थक शब्दों का ही महत्त्व रहता है। निरर्थक शब्द तभी आते हैं, जब वे वाक्य में कुछ अर्थपूर्ण स्थिति में होते हैं जैसे-बक-बक, अपने आप में निरर्थक शब्द है। जब ये शब्द किसी प्रश्नवाचक के साथ प्रयुक्त किए जाएँ, जैसे "क्या बक-बक लगा रखी है" तो इन शब्दों में सार्थकता आ जाती है।

योग्यता - वाक्यों के पदों का प्रसंग के अनुकूल भावबोध अर्थात् अर्थ ज्ञान कराने की क्षमता ही 'योग्यता' कहलाती है। यदि वाक्य में व्यक्त अर्थ में असंगति होगी, तो वाक्य अपूर्ण कहा जाएगा जैसे -

1. माली आग से उद्यान सींचता है।
2. हाथी को रस्सी से बाँधा है।

उक्त वाक्यों में प्रथम वाक्य में आग से सींचना धर्मविरुद्ध है क्यों कि आग का कार्य जलाना है सींचना नहीं। दूसरे वाक्य में हाथी को रस्सी से बाँधने की बात भी अनुचित है क्योंकि वह लोहे की जंजीरों से बांधा जाता है। अतः दोनों वाक्यों में भाव या अर्थ की असंगति है। अतः ये दोष युक्त है।

आकांक्षा - वाक्य के शब्द एक दूसरे पर आश्रित रहते है। इसलिए वाक्य के किसी भाव को पूर्ण रूप से समझने के लिए एक पद को सुनकर दूसरे पद को सुनने की उत्कण्ठा सहज उत्पन्न होती है। इसे ही आकांक्षा कहा जाता है। जैसे- भूखे बच्चे से माता कुछ शब्द 'हाँ बेटा' कह दे, तो बालक अगला शब्द - 'हाँ दूध लाती हूँ सुनने को लालायित रहेगा, जब तक माता दूध लाती है वाक्य को पूरा न सुन लें। यही आकांक्षा है इसके बिना वाक्य पूर्ण नहीं होता।

आसक्ति या निकटता- योग्यता और आकांक्षा के साथ वाक्य के शब्दों में परस्पर सान्निध्य भी आवश्यक हैं । अन्यथा अर्थ समझने में कठिनाई होती है ।

उदाहरणार्थ, हम आज कहे - वायुयान और कल कहें – उड़ता है, तो निश्चित रूप से अर्थ स्पष्ट नहीं होगा इसलिए दोनों पदों का समीप होना आवश्यक है ।

तभी 'वायुयान उड़ता है, वाक्य पूर्ण होगा।

पदक्रम - वाक्यों में प्रयोग करने के लिए शब्दों का सही व्याकरणानुसार यथा क्रम प्रयोग करना आवश्यक है। पद क्रम के अभाव में कुछ का कुछ अर्थ निकल जाता है और इस प्रकार विचारों का सही सम्प्रेषण नहीं हो सकता। जैसे- 'उत्थान देश परिश्रम अपना वाले हैं करते करनें' वाक्य तभी वाक्य कहलाएगा जब इसे सही ढंग से निम्न प्रकार व्यवस्थित लिखा जाए"परिश्रम करने वाले देश अपना उत्थान करते हैं।"

'खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।' वाक्य म पद क्रम सम्बन्धी दोष होने से अर्थ का अनर्थ हो रहा है। अतः इसे 'खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ' लिखने से ही सही अर्थ बोध होगा।

अन्वय - अन्वय शब्द का अर्थ है मेल। वाक्य में क्रिया के साथ लिंग, वचन, कारक पुरुष, काल आदि का अनुकरणात्मक व व्याकरणात्मक मेल होना आवश्यक है। जैसे-मछलियाँ पानी में तैर रही हैं- यहाँ 'मछलियाँ (कर्ता पद), प्रथम क्रम पर हैं तथा 'तैर रही हैं अन्तिम क्रम पर और 'पानी में' (स्थानवाचक क्रिया विशेषण) मध्यक्रम पर है। अतः उचित अन्वय के कारण यह वाक्य पूर्ण सार्थक सिद्ध हुआ।

वाक्य के साहित्य सम्बन्धी गुण:

1. स्पष्टता **2.** समर्थता **3.** श्रुतिमधुरता **4.** लचीलापन **5.** विषय का ज्ञान

वाक्य के अंग या घटक : प्रत्येक वाक्य के दो खण्ड होते हैं-

1. उद्देश्य (कर्ता) **2.** विधेय।

उद्देश्य- वाक्य में जिस व्यक्ति या वस्तु के विषय में कुछ कहा जाय, उसे उद्देश्य कहते हैं। अतः वाक्य में 'कर्ता' को उद्देश्य कहते हैं। **जैसे-**

1. बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन है।

2. महात्मा गाँधी विश्वबंधु हैं।

3. तेजस्वी व्यक्तियों की आयु नहीं देखी जाती।

उपर्युक्त वाक्यों में 'बुढ़ापा', 'महात्मा गांधी', 'तेजस्वी व्यक्तियों', आदि उद्देश्य हैं क्योंकि वाक्यों में इनके विषय में कुछ कहा गया है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि उद्देश्य के अंतर्गत कर्ता और कर्ता का विस्तार दोनों आते हैं। जैसे- "वीर हनुमान ने लंका में आग लगा दी।"

यहाँ रेखांकित पद बंध कर्ता के विस्तार को अभिव्यक्त करता है।

विधेय - वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। जैसे:-

1. गीता लिखती है।
2. इस कक्षा का नायक अध्यापक के पास गया है।
3. मैं दिल्ली में रहने वाले अपने मित्र से मिलने गया।

पहले वाक्य में 'लिखती है', दूसरे वाक्य में 'अध्यापक के पास गया' तथा तीसरे वाक्य में 'दिल्ली में रहने वाले अपने मित्र से मिलने गया', क्रमश विधेय हैं। कर्ता के अलावा शेष सभी पद विधेय होते हैं।

क्र. सं.	वाक्य	उद्देश्य	विधेय
1.	परिश्रमी व्यक्ति सफल होता है	परिश्रमी व्यक्ति	सफल होता है
2.	तेजस्वी चाणक्य मंत्री बनने में सफल रहा।	तेजस्वी चाणक्य	मंत्री बनने में सफल रहा।
3.	वीर हनुमान ने लंका में आग लगा दी।	वीर हनुमान ने	लंका में आग लगा दी।
4.	सीता पुस्तक पढ़ती है।	सीता	पुस्तक पढ़ती है।
5.	मोनिका लिखकर ही उठेगी	मोनिका	लिखकर ही उठेगी

सामान्य रूप से वाक्यों के दो रूप होते हैं

(1) अर्थ की दृष्टि से

(2) रचना की दृष्टि से

(1) अर्थ की दृष्टि से वाक्यों के आठ भेद होते हैं –

विधानवाचक वाक्य - जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने का सामान्य कथन हो और ऐसे वाक्यों में किसी काम के होने या किसी के अस्तित्व का बोध होता हो, उन्हें विधान वाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे -

1. सूर्य गर्मी देता है।
2. जनता ने प्रधानमंत्री का स्वागत किया।
3. हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है।

उक्त वाक्यों में सूर्य का गर्मी देना, प्रधानमंत्री का स्वागत करना, हिन्दी का राष्ट्र भाषा होना, आदि कार्य हो रहे हैं और किसी के होने का बोध हो रहा है। अतः विधानवाचक वाक्य हैं।

निषेधवाचक वाक्य - जिन वाक्यों से किसी कार्य के निषेध (न होने) का बोध होता हो, उन्हें निषेध वाचक वाक्य (नकारात्मक वाक्य) कहते हैं।

यथा

1. मैं आज नहीं लिखूगा।
2. माला नहीं नाचेगी।
3. आज हिन्दी अध्यापक ने कक्षा नहीं ली।

सभी वाक्यों में क्रिया सम्पन्न नहीं करने के कारण निषेध वाचक वाक्यों की रचना हुई है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 1 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 2 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
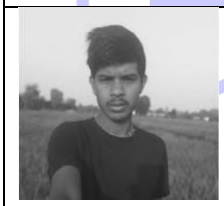	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

Call करें - 9887809083

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 6 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

FREE SAMPLE